Philosophy of Sense Data

ii) भूमिका — इन्द्रिय-प्रदत्त के संबंध में मूर के विचार उनके लेखों में, संक्षिप्त टिप्पणियों में बिखरे पड़े हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मूर ने इस समस्या पर बड़ा विचार किया है। प्रश्न है कि मूर का इस समस्या पर इतना ध्यान देने का क्या कारण है?

बात यह है कि अपने सामान्य-ज्ञान सम्बन्धी में मूर जिन सामान्य-ज्ञान विश्वासों का उदाहरण देते थकते नहीं, वे इस प्रकार की प्रतिज्ञप्तियाँ हैं — 'यह एक दवात है', 'यह एक सफेद लिफाफा है', 'ये मेरे दोनों हाथ हैं' आदि। इनके संबंध में उनका कहना है कि इनके संबंध में मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि वे सत्य हैं। ये सभी उदाहरण ऐसे हैं जिनमें मैं कुछ देख रहा हूँ। अतः 'देखना' अथवा 'प्रत्यक्ष' की समस्या महत्वपूर्ण हो जाती है। प्रश्न यह उठता है कि मैं क्या देखता हूँ। जब मैं सफेद लिफाफे को देख रहा हूँ तो क्या देखा जा रहा है — कोई वस्तु देखी जा रही है, लिफाफा देखा जा रहा है या सफेद देखा जा रहा है। इसी विश्लेषण में मूर इन्द्रिय-प्रदत्त की समस्या पर पहुँच जाते हैं।

वस्तुतः मूर ने 'प्रत्यक्ष' से संबंधित समस्याओं पर बहुत विचार किया है। शायद उन्हें ऐसा लगता है कि दर्शन जिस प्रकार की समस्याओं में उलझा रहता है, वे किसी-न-किसी प्रकार से 'प्रत्यक्ष' की समस्याओं के साथ जुड़ी हुई हैं। इसी कारण उनके अनेकों लेख इस प्रकार की समस्याओं से संबंधित है। इसी में एक मूल समस्या यह है कि हमें प्रत्यक्ष किस वस्तु का होता है, तथा यह भी कि क्या यह वस्तु हमें प्रदत्त होती है। इन प्रश्नों के विश्लेषण में अनेक समस्याओं का उभरना होता है। मूर वैसे ही समस्याओं का विवेचन अपने इन्द्रिय-प्रदत्त दर्शन में करते हैं। इस संबंध में उनका एक मूल लेख है 'The Status of the Sense Data'

ii) इन्द्रिय-प्रदत्त क्या है?

मूर यह स्वीकारते हैं कि इन्द्रिय प्रदत्त (Sense-Data) शायद अनेकार्थक है। वैसे इसका शाब्दिक अर्थ तो यही है कि जो इन्द्रियों को प्रदत्त हो। किन्तु इतने से इसका स्वरूप स्पष्ट नहीं होता। मैं एक 'दृश्य वस्तु देख रहा हूँ' — प्रश्न है कि

इन्द्रियों को क्या प्रदत्त हो रहा है — पहाड़, पहाड़ की चोटी पर बादल, या सौन्दर्य, या कुछ और? अतः मूर सर्वप्रथम यह तय करना चाहते थे कि वे किसी प्रकार के तत्व हैं जिनकी विवेचना हम इन्द्रिय-प्रदत्त के अन्तर्गत करना चाहते हैं।

उनका कहना है कि हमारी मानसिक क्रियाओं में कम-से-कम पाँच ऐसे उदाहरण तो मिल ही जाते हैं जिन्हें हम वृहत अर्थ में इन्द्रिय-अनुभव (sensory experience) कह सकते हैं — (1) इनके अन्तर्गत सबसे ऐसे तत्व आते हैं जो जाग्रत अवस्था में मन में चित्र के सामने आते-जाते रहते हैं इन्हें प्रतिमा (Image) कहा जा सकता है। किसी वस्तु से इस जर अवस्था में इन्द्रिय-संपर्क नहीं हो रहा है, फिर भी प्रतिमाओं की स्पष्ट अनुभूति हमें होती है। (2) स्वप्नावस्था में भी कुछ अनुभव होते हैं। इन अनुभवों में कुछ तो इन्द्रिय अनुभव जैसा होता है तथा कुछ प्रतिमाओं जैसा। किन्तु स्वप्नावस्था में भी कुछ अनुभव जैसा होता ही है।

(3) भ्रम (Illusion) तथा मतिविभ्रम (Hallucination) भी एक प्रकार का अनुभव होता ही है। इसमें कुछ अवगति होती ही है। (4) एक विशेष प्रकार का अनुभव मे उत्तर प्रतिमाओं का अनुभव (after-image) होता है। उदाहरणतः हम एक जलते हुए बल्ब को देख रहे है, अब हमने आँखे बन्द कर ली है।